RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
Refreed Journal

रासो

अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-16, अंक-4, सितम्बर अक्टूबर नवम्बर 2023

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
Refreed Journal

रासो

इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-16 | अंक - 4 | सितम्बर-अक्टूबर-नवम्बर-2023

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

निदेशक
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

संरक्षक

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** - पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सलाहकार मण्डल

* **प्रो. विभा उपाध्याय** - प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** - प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** - पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** - पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** - सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंध अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** - पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** - आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** - पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
डॉ. रीता पारीक
प्राचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. मृत्युंजय शर्मा
सह-आचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ सहायक सम्पादक
डॉ. निष्काम शर्मा

☆ शब्द संयोजन
मुकेश कुमार माहेश्वरी

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
सृजन संस्थान,
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
सृजन संस्थान,
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर दूरभाष : 0145-2442701

सहयोग दर

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

मलिक मुहम्मद जायसी के काव्य में प्रेमतत्व की अभिव्यक्ति

रामस्वरूप गढ़वाल
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

मलिक मुहम्मद जायसी की 'पद्मावत' न केवल एक ऐतिहासिक-काव्यात्मक रचना है, बल्कि प्रेम और उसकी साधना के उच्चतम आयाम को भी दर्शाती है। इसमें प्रेम का स्वरूप भावनात्मक आकर्षण से कहीं ऊपर उठकर आध्यात्मिक साधना, त्याग और निष्ठा का प्रतीक बन जाता है। रचना का केंद्र रत्नसेन और पद्मावती के प्रेम में निहित है। रत्नसेन का प्रेम इतना गहन और दृढ़ होता है कि वह अपने वैभव, सुख-सुविधाओं और परिवारिक सुख को त्याग कर जोगी का जीवन अपनाता है। वह नागमती को पीछे छोड़कर, जो उसकी पत्नी और जीवनसाथी है, सिंहल की ओर निकल पड़ता है। यह त्याग और समर्पण केवल रोमांटिक प्रेम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रेम की पूर्ण साधना और आत्म-उन्नति का मार्ग है।

रत्नसेन के मार्ग में अनेक बाधाएँ आती हैं—प्राकृतिक संकट, सामाजिक बाधाएँ और व्यक्तिगत कठिनाइयाँ—किन्तु वह अपने प्रेम के लक्ष्य से विचलित नहीं होता। जायसी ने यह स्पष्ट किया है कि प्रेम की सच्ची साधना केवल उन्हीं को प्राप्त होती है जो अपने प्राणों की परवाह किए बिना अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित रहते हैं। इस दृष्टि से प्रेम न केवल आनंद और सुख का साधन है, बल्कि यह कष्ट, परिश्रम और आत्म-नियंत्रण का मार्ग भी है।

रचना में हेरामन सुग्गा के संवाद के माध्यम से यह संदेश और स्पष्ट होता है। हेरामन रत्नसेन को समझाता है कि प्रेम में सफलता पाने के लिए सत्यनिष्ठा और कठिन संघर्ष आवश्यक है। प्रेम केवल सुनने और सोचने का विषय नहीं, बल्कि इसे अनुभव करने और प्रत्येक बाधा का सामना करने का साहस चाहिए। प्रेम की राह में जितनी कठिनाइयाँ आती हैं, उतना ही प्रेम का परिमार्जन और उसकी शुद्धता बढ़ती है।

जायसी ने प्रेम को सूफी दृष्टिकोण से भी चित्रित किया है। सूफी परंपरा में प्रेम केवल मानवीय आकांक्षा नहीं, बल्कि ईश्वर के प्रति समर्पण और आत्मिक शुद्धि का माध्यम माना जाता है। इसी दृष्टि से रत्नसेन का प्रेम मार्ग सूफियों द्वारा बताई गई कठिन, दुर्गम और कांटों से भरी साधना के अनुरूप है। रचना यह संदेश देती है कि प्रेम में सफलता वही प्राप्त करता है जो अपने प्राण की चिंता किए बिना अपने उद्देश्य में निष्ठावान और समर्पित रहता है।

'पद्मावत' में जब सुग्गा रत्नसेन को पद्मावती के सौंदर्य के बारे में बताता है, तो रत्नसेन का हृदय मूर्छित हो जाता है। जायसी इस दृश्य के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि प्रेम का घाव अत्यंत गहरा होता है, और इसे वही समझ सकता है जिस पर इसका वास्तविक असर होता है। प्रेम की पीड़ा और उसकी

शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।

अनुभूति केवल उसी के लिए वास्तविक होती है, जिसने इसे अनुभव किया हो। इसके आगे जायसी इसे समुंदर की लहरों से तुलना करते हैं—प्रेम असंख्य और असीम है, और इसके अनुभव में लहरें लगातार बढ़ती और फैलती रहती हैं।

जायसी ने प्रेम के मार्ग को अत्यंत कठिन और दुर्गम बताया है, किंतु वही लोग इसे खेलते हैं, उनके लिए यह दोनों लोकों में वरदान समान बन जाता है। प्रेम का मार्ग दु:ख और पीड़ा से भरा है, किंतु वही दु:ख भीतर से प्रेम-रस को जन्म देता है। प्रेम का अनुभव केवल उन्हीं को प्राप्त होता है, जो मृत्यु की पीड़ा सहने और अपने प्राण की चिंता न करने की क्षमता रखते हैं। रत्नसेन को यह ज्ञान है कि प्रेम में कठिनाई और दुश्वारियाँ अनिवार्य हैं, लेकिन ये सभी कठिनाइयाँ मिलन के क्षण में समाप्त हो जाती हैं।

रत्नसेन स्वयं स्वीकार करता है कि प्रेम कठिन है, परन्तु इसे खेलना संसार और परलोक दोनों का सौभाग्य है। प्रेम की राह में दुख तब तक है जब तक प्रेमी और प्रेमास्पद का वास्तविक मिलन नहीं होता। जब मिलन होता है, तो संसार का सारा आकर्षण और मृत्यु का भय प्रेमी पर प्रभाव नहीं डाल पाता। रत्नसेन के हृदय में प्रेम इतना गहरा है कि उसका अस्तित्व केवल प्रेम के साथ ही परिभाषित होता है—यह प्रेम उसे अमरत्व का अनुभव कराता है।

पद्मावती का दृष्टिकोण भी इस गहन प्रेम की पुष्टि करता है। वह जानती है कि रत्नसेन अभी प्रेम के रंग में पूरी तरह से रंगा नहीं है; अभी वह अनुभव में 'कच्चा' है। प्रेम का वास्तविक मर्म वही जान सकता है जिसने मरकर भी अपने प्रेम का संग निभाया। इसका अर्थ यह है कि प्रेम केवल भावना नहीं, बल्कि समर्पण, त्याग और मृत्युभय को भी परास्त करने वाली शक्ति है। जब प्रेम की यह गहन साधना पूर्ण होती है, तब प्रेमियों का मिलन स्थायी और अमर बन जाता है—भले ही शरीर मृत्यु को प्राप्त हो जाए, उनका प्रेम और आत्मिक जुड़ाव कभी समाप्त नहीं होता।

'पद्मावत' में रत्नसेन की मृत्यु के उपरांत पद्मावती और नागमती दोनों सती हो जाती हैं। चिता पर भस्म होते समय वे अपने प्रियतम को यह कहते हुए विदा करती हैं कि जीवन में उनका प्रेम अत्यंत गहरा था और मृत्यु में भी वे उसके साथ रहना चाहती हैं।

यह दृश्य स्पष्ट रूप से यह दिखाता है कि सच्चा प्रेम केवल बाहरी आकर्षण नहीं, बल्कि आत्मा का सम्पूर्ण समर्पण और स्थायित्व है। जायसी ने इसे कविता में इस प्रकार व्यक्त किया है कि 'इस संसार में कुछ भी स्थिर नहीं है, परन्तु प्रेम का संबंध दोनों जगों में अमर है।'

वहीं, अलाउद्दीन का प्रेम पद्मावती के प्रति केवल बाह्य सौंदर्य पर आधारित है। उसमें आत्मिक साधना, त्याग या शुद्धता नहीं है। उसका प्रेम अहंकार और तृष्णा से ग्रसित है, इसलिए उसे पद्मावती का वास्तविक प्रेम प्राप्त नहीं हो पाता। उसे केवल चिता की राख ही मिलती है और निराशा में उसे यह स्वीकार करना पड़ता है कि यह संसार असत्य और क्षणिक है।

जायसी प्रेम की स्थायित्व और आध्यात्मिकता को इसी उपदेश के माध्यम से दिखाते हैं। प्रेमी व्यक्ति के हृदय में सत्य का संचार हो जाता है और उसे संसार की भौतिक चिन्ताएँ, धूप-छाँव, भय या मृत्यु की कोई परवाह नहीं रहती। प्रेम के मार्ग में जो दुख होता है वह व्यर्थ नहीं जाता; वह हृदय को पवित्र करता

है और आत्मा को परिष्कृत करता है।

'पद्मावत' में महादेव रत्नसेन से कहते हैं कि बिना दुख सहे प्रिय की प्राप्ति संभव नहीं। प्रेम-साधना के मार्ग पर जो व्यक्ति स्थिर और सिद्ध होता है, उसके हृदय में क्रोध नहीं रहता, वह सहनशील, उदार और तरल हो जाता है। जैसे जल किसी रंग में ढल जाता है, वैसे ही प्रेमी भी अपने प्रेमास्पद के अनुसार अपने हृदय और स्वभाव को बदल लेता है। यह गुण उसे युद्ध या क्रोध में नहीं, बल्कि प्रेम और सहनशीलता में महान बनाता है।

रत्नसेन ने अपने अनुयायियों को यह शिक्षा दी कि प्रेम में तप, धैर्य और संयम आवश्यक हैं। प्रेमी जल की भाँति तरल और लचीला होता है; तलवार की धार, युद्ध या हिंसा उसका प्रभाव नहीं डाल सकती। यदि प्रेम में तप और साधना है, तो प्रेमी कठिन परिस्थितियों में भी स्थिर रहता है। वही व्यक्ति जो प्रेम की आग में तपता है, उसका दुख समाप्त होता है और प्रेम का अनुभव शुद्ध, स्थायी और अमर बनता है।

जायसी ने प्रेम का सर्वोच्च रूप रत्नसेन के कथन के माध्यम से प्रस्तुत किया है कि उसके प्रत्येक रक्त की बूंद में पद्मावती बसी है। सूली पर चढ़ाने वाले उसे चेतावनी देते हैं कि वह एक बार स्मरण कर ले, अन्यथा उसे केतकी का भौरा बना दिया जाएगा। किंतु रत्नसेन जरा भी विचलित नहीं होता। वह स्पष्ट करता है कि हर सांस में पद्मावती का स्मरण है, उसके नाम पर प्राण न्यौछावर हैं, उसके रोम-रोम में वह बसी हुई है और हाड़-हाड़ में उसकी ध्वनि सुनाई देती है। चाहे वह जीवित रहे या मृत्यु प्राप्त करे, पद्मावती उसके साथ है। यह प्रेम का सर्वोच्च रूप है—जहाँ प्रेमी अपनी प्रेयसी को एक क्षण के लिए भी विस्मृत नहीं कर सकता।

'पद्मावत' में रत्नसेन को अंतत: पद्मावती प्राप्त हो जाती है और उनका विवाह सम्पन्न होता है। किंतु इस सफलता के पश्चात भी रत्नसेन की साधना पूर्ण नहीं होती। नागमती का संदेश उसे घर की स्थिति की जानकारी देता है। नागमती की दशा सुनते ही उसकी मन:स्थिति डांवाडोल हो जाती है। यह दर्शाता है कि अभी भी ''अहंकार और लोभ'' रत्नसेन के हृदय में विद्यमान हैं। प्रेम साधना की पूर्णता केवल प्रेम के प्राप्त होने से नहीं आती, बल्कि इसके लिए व्यक्ति का आत्म-नियंत्रण और पूर्ण समर्पण आवश्यक होता है।

जैसे ही वह पद्मावती के साथ स्वदेश लौटता है, सागर में तूफान उठता है और नौका दुर्घटनाग्रस्त हो जाती है। जायसी इस दृश्य के माध्यम से यह दिखाते हैं कि प्रेम और साधना का मार्ग हमेशा सरल नहीं होता। प्रेम की वास्तविक साधना में ''कठिनाइयाँ, विपत्तियाँ और परीक्षण'' अनिवार्य हैं। रत्नसेन को इस तूफान और बाधाओं का सामना करना पड़ता है ताकि उसकी साधना पूर्ण हो और प्रेम का अनुभव वास्तविक अर्थ में शुद्ध और स्थायी बन सके।

इस प्रकार, जायसी प्रेम के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि सच्चा प्रेम केवल प्राप्ति या बाहरी सफलता तक सीमित नहीं है। यह जीवन भर की साधना, आत्म-शुद्धि, साहस, धैर्य और विपत्तियों में भी प्रेम को निभाने की क्षमता से ही पूर्ण होता है। रत्नसेन के उदाहरण में यह दिखाया गया है कि प्रेम साधना में बाहरी प्राप्ति केवल एक चरण है; असली साधना तो हृदय की शुद्धता, समर्पण और आत्मिक परिपक्वता में है।

मलिक मुहम्मद जायसी के काव्य में प्रेम का स्वरूप तभी पूर्ण होता है जब उसमें विरह की अग्नि

समाहित होती है। प्रेम में विरह को वे केवल एक अवस्था नहीं, बल्कि ''प्रेम की कसौटी'' मानते हैं। विरह की स्थिति में ही प्रेम की तीव्रता, उसकी शुद्धता और एकनिष्ठता की वास्तविक परीक्षा होती है। बिना विरह के प्रेम स्थूल और अपूर्ण रह जाता है। यही कारण है कि सूफी कवियों ने विरह का अत्यंत मार्मिक और विस्तारपूर्ण चित्रण किया है। 'पद्मावत' में रत्नसेन, पद्मावती और नागमती—तीनों ही विरह-विकल दिखाई देते हैं। तीनों के विरह की पीड़ा अलग-अलग रूपों में प्रकट होती है, किंतु उसका मूल भाव एक ही है—प्रेम की गहन साधना।

जायसी ने रत्नसेन के विरह का चित्रण अत्यंत व्यापक और विराट रूप में किया है। रत्नसेन का विरह केवल व्यक्तिगत दुःख नहीं रह जाता, बल्कि वह सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त हो जाता है। कवि यहाँ तक कहता है कि उसके विरह की अग्नि से धरती और स्वर्ग दोनों जल उठते हैं। यह विरह इतना प्रगाढ़ है कि समस्त संसार उसके ताप से आक्रांत हो जाता है। संसार में खड्ग की धार को अत्यंत तीव्र और प्राणघातक माना जाता है, किंतु जायसी के अनुसार विरह की पीड़ा उससे भी अधिक तीव्र होती है। इस तुलना के माध्यम से कवि यह स्पष्ट करता है कि शारीरिक कष्ट से कहीं अधिक गहरा और असह्य मानसिक तथा आत्मिक कष्ट विरह में निहित होता है।

सूफी दर्शन के अनुसार आत्मा (रूह) का मूल संबंध ईश्वर से है। जैसे ही आत्मा ईश्वर से विलग होती है, वह विरह में तड़पने लगती है। जब तक वह अपने अहंकार और अस्तित्व को त्याग कर पूर्ण रूप से ईश्वर में लीन नहीं हो जाती, तब तक वह विरह की अग्नि में जलती रहती है। इसी सिद्धांत के कारण सूफी कवि विरह को प्रेम का अनिवार्य और आवश्यक गुण मानते हैं। विरह आत्मा को शुद्ध करता है, अहंकार को गलाता है और प्रेम को निर्विकार बनाता है।

'पद्मावत' में रत्नसेन, पद्मावती और नागमती के विरह का मूल रहस्य यही सूफी दृष्टि है। विरह की अग्नि में तपकर ही प्रेम शुद्ध, निष्काम और स्थायी बनता है। जब यह अवस्था प्राप्त हो जाती है, तब प्रेमास्पद से मिलन में कोई बाधा शेष नहीं रहती। इस प्रकार जायसी के काव्य में विरह केवल दुःख का चित्रण नहीं है, बल्कि वह प्रेम की साधना, आत्मिक शुद्धि और आध्यात्मिक पूर्णता का अनिवार्य सोपान है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि मलिक मुहम्मद जायसी के 'पद्मावत' में प्रेम को केवल सांसारिक आकर्षण के रूप में नहीं, बल्कि एक कठोर, दीर्घ और आध्यात्मिक साधना के रूप में प्रस्तुत किया गया है। रत्नसेन का प्रेम त्याग, तप, विरह और आत्म-शुद्धि से होकर गुजरता है। प्रेम की पूर्णता प्राप्ति से नहीं, बल्कि कष्ट, विपत्ति और विरह की अग्नि में तपने से होती है। पद्मावती और नागमती के साथ रत्नसेन का संबंध यह सिद्ध करता है कि सच्चा प्रेम अहंकार, लोभ और तृष्णा से मुक्त होता है। अलाउद्दीन का प्रेम बाह्य सौंदर्य और वासना पर आधारित होने के कारण असफल सिद्ध होता है, जबकि रत्नसेन का प्रेम मृत्यु के बाद भी अमर बना रहता है। विरह प्रेम की अनिवार्य परीक्षा है, जो प्रेम को शुद्ध, निर्विकार और चिरंतन बनाती है। इस प्रकार 'पद्मावत' में जायसी ने प्रेम को आत्मा और परम सत्ता के मिलन की सूफी साधना के रूप में प्रतिष्ठित किया है, जहाँ प्रेम ही जीवन, मृत्यु और मोक्ष का अंतिम सत्य है।

ꕥꕥꕥ

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. शिव सहाय पाठक, मलिक मोहम्मद जायसी और उनका काव्य, साहित्य भवन इलाबाद, 1976
2. डॉ. माता प्रसाद गुप्त (संपा.), जायसी पाठावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960
3. डॉ. नागेन्द्र, पद्मावत: एक आलोचनात्मक अध्ययन, प्रयागराज प्रकाशन, प्रयागराज, 1965
4. आचार्य हज़ारी प्रसाद मंडली, जायसी का पद्मावत, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1958
5. डॉ. ओम प्रकाश शर्मा, सूफी वीरों का देश, प्रथम संस्करण 1975, पुनर्मुद्रण 2020
6. डॉ. रामकुमार वर्मा, मध्यकालीन हिंदी साहित्य, विकास प्रकाशन, गाजियाबाद, 1982
7. डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, जायसी उनके और युग, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1990
8. डॉ. नामवर सिंह, सूफी काव्य परंपरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978
9. सं. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, जायसी ग्रन्थावली, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, संवत 2017
10. प्रो. विजयदेव साही, जायसी, हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद, 1983